



॥ श्री यमदेव व्रत कथा ॥
॥ ॐ यमाय नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री यमदेव व्रत कथा ॥

प्राचीन काल में आर्यावर्त के एक समृद्ध नगर में धर्मशील नाम का एक धनी व्यापारी रहता था। उसके पास धन, परिवार और वैभव की कोई कमी नहीं थी, परंतु वह अपने व्यापार में छल-कपट, असत्य और अन्याय का सहारा लेने लगा। गरीबों का धन दबा लेना, झूठ बोलना और स्वार्थ के लिए दूसरों को कष्ट देना उसका स्वभाव बन गया।

समय बीतता गया। एक दिन उसके घर में लगातार विपत्तियाँ आने लगीं। व्यापार में हानि होने लगी, परिवार में अशांति फैल गई और उसका मन भय तथा चिंता से भर गया। अनेक उपाय करने पर भी उसे कोई शांति नहीं मिली।

एक दिन नगर में एक तेजस्वी ऋषि पधारे। धर्मशील ने उनके चरणों में प्रणाम कर अपनी पीड़ा सुनाई। ऋषि ने ध्यान करके कहा—
"हे वत्स! मनुष्य अपने कर्मों का फल अवश्य प्राप्त करता है। धर्म से विमुख होकर कोई भी स्थायी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। यदि तुम सच्चे मन से धर्मराज यमदेव का व्रत, पूजा और स्मरण करोगे, अपने दोषों का प्रायश्चित्त करोगे तथा सत्य और न्याय का पालन करोगे, तो तुम्हारा जीवन बदल जाएगा।"

ऋषि के उपदेश से धर्मशील का हृदय परिवर्तित हो गया। उसने निश्चय किया कि वह प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी (यम चतुर्दशी) अथवा धनतेरस के अवसर पर आने वाली यमदीपदान तिथि पर श्रद्धापूर्वक श्री यमदेव का व्रत करेगा।

व्रत के दिन उसने प्रातः स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण किए। दक्षिण दिशा की ओर मुख करके श्री यमदेव का ध्यान किया, तिल के तेल का दीपक जलाया, काले तिल, पुष्प और जल अर्पित किए। उसने श्रद्धापूर्वक "ॐ यमाय नमः" मंत्र का 108 बार जप किया, यमदेव की स्तुति, आरती और चालीसा का पाठ किया तथा दिनभर सत्य, संयम और दया का पालन किया।

सायंकाल उसने दक्षिण दिशा में दीपदान किया और प्रार्थना की—
"हे धर्मराज! मुझे सदैव सत्य के मार्ग पर चलने की शक्ति दें। मेरे पापों को

क्षमा करें, मेरे पितरों को सद्गति प्रदान करें तथा मेरे जीवन को धर्ममय बनाएं।"

कुछ समय बाद उसके जीवन में परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देने लगा। उसने जिन लोगों के साथ अन्याय किया था, उनसे क्षमा माँगी और उनका धन लौटा दिया। उसके व्यवहार में विनम्रता आ गई, परिवार में प्रेम बढ़ा और व्यापार भी ईमानदारी के कारण उन्नति करने लगा। नगर के लोग उसका सम्मान करने लगे।

एक रात्रि धर्मशील ने स्वप्न में धर्मराज यमदेव का दिव्य दर्शन किया। यमदेव ने कहा—

"हे धर्मशील! मैं केवल दंड देने वाला नहीं, बल्कि धर्म का रक्षक हूँ। जो मनुष्य सत्य, न्याय, दया, सेवा और सदाचार का पालन करता है, उस पर मेरी कृपा बनी रहती है। कर्म ही मनुष्य का वास्तविक धन है। सद्कर्म करने वाला कभी भयभीत नहीं होता।"

यह सुनकर धर्मशील का जीवन पूर्णतः धर्ममय हो गया। उसने सदैव सत्य का पालन किया, पितरों का सम्मान किया, दान-पुण्य किया और समाज की सेवा में अपना जीवन लगा दिया। अंत समय में वह शांतचित्त होकर भगवान का स्मरण करता हुआ दिव्य गति को प्राप्त हुआ।

॥ कथा का संदेश ॥

यह कथा हमें सिखाती है कि धर्मराज यम केवल मृत्यु के देवता नहीं, बल्कि धर्म, न्याय और कर्मफल के अधिष्ठाता हैं। जो व्यक्ति सत्य, ईमानदारी, दया, सेवा, संयम और सदाचार का पालन करता है तथा अपने कर्मों को शुद्ध रखता है, उसका जीवन अधिक संतुलित और कल्याणकारी बनता है। व्रत का वास्तविक फल बाहरी अनुष्ठानों के साथ-साथ उत्तम आचरण में निहित है।

॥ व्रत प्रार्थना ॥

हे धर्मराज यमदेव! हमें सदैव सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें। हमारे मन से पाप, अहंकार और अन्याय का नाश करें। हमारे पितरों पर कृपा बनाए रखें, हमारे परिवार की रक्षा करें तथा अंत समय में आपके स्मरण से हमें सद्गति प्राप्त हो।